

भारतीय ज्योतिष विज्ञान परिषद् (पंजी०) चेन्नई

ज्योतिष प्रवीण परीक्षा : दिसम्बर-2010

प्रश्न पत्र-III

समय : 3 घन्टे

कुल अंक : 50

कोई भी पाँच प्रश्न हल करें। प्रश्न 1 तथा 6 अनिवार्य हैं। दोनों भागों में से कम से कम एक-एक प्रश्न का चयन करते हुए तीन अन्य प्रश्नों के उत्तर दें। सब प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-I (ज्योतिष योग)

1. निम्न जन्मांग की सभी ग्रहों की विभिन्न भावों में स्थिति के आधार पर विवेचना करें।
लग्न-कन्या 17:26, सूर्य-वृषभ 25:01, चन्द्रमा-वृश्चिक 4:38,
मंगल-वृषभ 6:22, बुध(व)-वृषभ 17:02, गुरु(व)-मकर 8:26,
शुक्र-मिथुन 9:12, शनि-सिंह 7:27, राहु-मेष 1:19
(9 जून 1949, 2:10 दोपहर, अमृतसर)
2. नीच ग्रहों का क्या प्रभाव होता है? क्या नीचत्व का परिहार संभव है? यदि हाँ, तो किन स्थितियों में?
3. लक्ष्मीनारायण योग एवं महाभाग्य योग उचित उदाहरणों द्वारा समझाएं।
4. प्रश्न 1 में दिए जन्मांग में कोई चार योग बताएं व उनके फल पर चर्चा करें।
5. निम्न का उत्तर दें :-
(क) नवांश कुण्डली की क्या महत्ता है?
(ख) रोहिणी, पुष्यमी, मृगशिरा व विशाखा नक्षत्रों के क्या लक्षण हैं?

भाग-II (दशा व गोचर)

6. निम्न का उत्तर दें :-
(क) प्रश्न 1 के लिए शेष विंशोत्तरी दशा व बुध महादशा में सभी अन्तर दशाओं की गणना करें।
(ख) प्रश्न 1 के लिए बुध महादशा में क्या सामान्य फल होंगे व उसमें सूर्य की अन्तरदशा में क्या विशेष फल होंगे?
7. (क) गोचर फल चन्द्रमा से ही क्यों देखे जाते हैं?
(ख) गोचर में वेध से क्या समझते हैं? शनि के लिए वेध की क्या स्थितियाँ हैं?
8. किसी जन्मांग के फलादेश में गुरु एवं शनि के गोचर को क्यों महत्व दिया जाता है? गुरु एवं शनि के पर्याय फलों पर चर्चा करें।
9. शुक्र एवं शनि के विंशोत्तरी दशा पद्धति में क्या फल मिलते हैं? चर्चा करें।
10. राहु के गोचर फल पर चर्चा करें।